IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फैशन के प्रति छात्राओं का बदलता दृष्टिकोण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोडा की छात्राओं के विशेष सदर्भ में

प्रतिभा पंत

प्रो0 इला साह

शोध सारांश–

आधुनिक युग फैशन का युग है। आमतौर पर विभिन्न प्रकार के कपडे पहनने श्रंगार करने को फैशन माना जाता है। फैशन केवल वेशभूषा तक ही सीमित नहीं है। वास्तव में फैशन का तात्पर्य लोकप्रिय व्यवहार के उन तरीकों से है जो कि कपडे पहनने का तरीका बाल सवारने मनोरंजन संगीत श्रंगार करने साहित्य आदि के क्षेत्र में नवीनता लाने के लिए अपनाया जाता है। कभी–कभी तो फैशन इतनी तेजी से बदलता है उसके साथ कदम मिलाकर चलना हमारे लिए कठिन हो जाता है। **प्रो0 किम्बाल यंग के शब्दों में फैशन वह प्रचलन या फैली हुई रीति तरीका कार्य करने का ढंग अभिव्यक्ति की विशेषता या सांस्कृतिक लक्षणों को प्रस्तुत करने की विधि है जिसे बदलने की आज्ञा स्वयं प्रथा देती है।**[1]

कीवर्ड – फैशन, आर्थिक जीवन, प्रभाव

फैशन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसे हम अपने से अलग नहीं रख सकते। आज वर्तमान समय में लोग फैशन में सिर्फ कपडों को ही ज्यादा महत्व देते हैं लेकिन वास्तव में फैशन का मतलब कुछ अलग ही है। लोगो से बात करने के साथ–साथ आपकी शिक्षा, आपके रहन सहन का तरीका भी फैशन के अन्तर्गत आता है। फैशन के साथ चलकर हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। **ई0ए0 रास ने फैशन की परिभाषा करते हुए लिखा है फैशन किसी भी जनसमूह की रूचि या पसंद में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों को कहते हैं जो उपयोगिता द्वारा निर्धारित नहीं होता यद्यपि उसमें उपयोगिता का तत्व भी सम्मिलित हो सकता है।**[2]

फैशन से हम अपने जीवनस्तर को बेहतर बना सकते हैं। जिस तरह से हम व्यवहार करते हैं जिन उपकरणों का इस्तेमाल करते है इन सबका चयन हम फैशन के अनुसार ही तो करते हैं। फैशन एक ऐसी चीज है जो हमें और अधिक कमाने के लिए प्रेरित करती है ताकि हम अपनी जरूरत की चीजों पर खर्च कर सकें।

साहित्य पुनरावलोकन

किसी भी शोध के लिए सम्बंधित विषय पर पूर्व में किये गये कार्यो को गहनता से जानना अनिवार्य व आवश्यक होता है जिसके लिए साहित्य पुनरावलोकन को आधार बनाया गया है। विभिन्न विद्वानों ने समय–समय पर अपने शोध व शोध पत्रों के आधार पर फैशन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

फैशन डिजाइनर **दीपिका गेहलानी** ने नारी के संदर्भ में फैशन को इस प्रकार स्पष्ट किया है कि 'दुनिया में करोड़ों स्त्रियां हैं, परन्तु विधाता ने प्रत्येक स्त्री को दूसरों से अलग बनाया है, इसलिए जो वस्त्र एक स्त्री पर फबता है कोई जरुरी नहीं है कि दूसरे पर भी फबे। आपको यह जानना जरूरी है कि आप पर कैसे और कौन से परिधान अच्छे लगते हैं जिससे स्त्री का सौम्य और कोमल रूप सामने उभर कर आये।[3]

सुश्री प्रीति एवं रिंकू ने भारतीय फैशन बाजार का मूल्यांकन करके स्पष्ट किया है कि "आधुनिक दौर में सर्वाधिक परिवर्तन भारतीय बाजार में आया है जिसने लोगों की अपनी आवश्यकताओं के प्रति परम्परागत सोच को परिवर्तित कर दिया है। आज के भारतीय समाज में भी समय की कमी बड़ी समस्या बनती जा रही है। आज ग्राहक की जेब में पैसा तो है लेकिन दाएं और बाएं देखने का समय नहीं है, इसलिए वह चाहता है अपने पैसों का सही इस्तेमाल। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बढ़ती व्यावसायिक प्रतियोगिता में ग्राहकों के रास्ते आसान कर दिये हैं।[4]

सर्वश्री स्टूअर्ट चेज ने सन् 1929 में संयुक्त राज्य अमेरिका में जनता द्वारा फैशन पर किये जाने वाले व्यय का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि जनता कुल व्यय का एक तिहाई भाग फैशन की वस्तुओं पर खर्च करती है।[5]

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोधकार्य हेतु शोधकर्ता को कुछ उद्देश्य को लेकर चलना होता है जिससे शोध को एक गति प्रदान की जा सके। अतः प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उद्देश्यों को शोध हेतु लिया गया है–

- फैशन के कारण समाज पर पडने वाले प्रभाव को जानना।
- फैशन के कारण आर्थिक जीवन पर पडने वाले प्रभावों को जानना।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेषणात्मक है। अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया जायेगा। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से फैशन एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका संबंध मानवीय व्यवहारों में नवीनता एवं परिवर्तनशीलता का समावेश करने हेतु अनेक मनोभावों की संतुष्टि करने से है जिसमें आधुनिक सोच, औद्योगिकरण, पाश्चात्य मूल्यों का बढता हुआ प्रभाव तथा नवीन संचार साधनों के कारण फैशनगत व्यवहार अत्यंत प्रभावित हुआ है।

अतः फैशन का मनोवैज्ञानिक तर्क, विश्लेषणात्मक स्वरूप तथा मानवीय मनोभावों पर फैशन के प्रभाव को जानना अतिआवश्यक है। हालांकि इस प्रकार अनेक अध्ययन हैं किन्तु फैशन से पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखकर मुख्य रूप से अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प ही प्रस्तुत अध्ययन के लिए उपयुक्त समझा गया।

अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से आर्थिक जीवन पर पडने वाले प्रभाव के संदर्भ में फैशन के प्रति छात्राओं के बदलते दृष्टिकोण एवं उनमें होने वाले परिवर्तन की एक समाजशास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की जायेगी। प्रस्तुत अध्ययन सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा मे ंकला संकाय (बी0 ए0 प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष) में अध्ययनरत् स्नातक की छात्राओं के संदर्भ मे ंअध्ययन करना है।

प्रस्तुत अध्ययन निदर्श पर आधारित किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन के लिए कला संकाय में अध्ययनरत् स्नातक की छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें स्नातक प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष में क्रमशः 355, 450, 306 छात्राएं अर्थात् 1111 छात्राएँ अध्ययन करती हैं। किंतु संख्या ज्यादा होने के कारण अध्ययन हेतु इन्हें समग्र रूप में सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

अतः निदर्श पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिनमें से अध्ययन हेतु दैव निदर्शन पद्धति का उपयोग कर निदर्श के रूप में प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष में 10 प्रतिशत छात्राओं को समानुपातिक आधार पर क्रमश 36, 45, 30 छात्राओं अर्थात् कुल 111 छात्राओं को अध्ययन हेत चयनित किया गया है। यह चयन लाटरी पद्धति द्वारा किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में कुल 111 छात्राओ ं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित होगा तथा आंकड़े एकत्रित करने के लिए मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची तथा आवश्यकतानुसार, असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

फैशन एवं आर्थिक पक्ष

फैशन उद्योग स्वयं में सर्वाधिक खर्चीला, उत्तेजना व ग्लैमर से परिपूर्ण क्षेत्र है जो निरंतर नये–नये उत्पादों द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग को आकर्षित करता है। प्रत्येक उत्पाद उद्देश्य से परिपूर्ण होता है। उसका क्षेत्र चाहे सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो, व्यक्तिगत हो या फिर यौन आकर्षण।

व्यवहारिक रूप से फैशन बाजारों, गलियों से गुजरता हुआ घरों में और फिर कार्यक्षेत्र तक पहुंच जाता है। मौलिक रूप में दो तथ्य फैशन बाजार को प्रभावित करते हैं। एक तरफ, नई–नई तकनीकों, उत्पादों और प्रक्रियाओं की निरंतर खोज होती रहती है। दूसरी तरफ ये सब उपभोक्ता की आवश्यकता, इच्छा व बाजार मूल्य के ज्ञान पर निर्भर रहती है।

फैशन व आर्थिक पक्ष एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष मजबूत होता है तो उसे फैशन संबंधी उपकरण आसानी से प्राप्त हो जाते हैं और वह मन चाहे फैशन कर सकते हैं। लेकिन कभी–कभी व्यक्ति का आर्थिक पक्ष कमजोर होता है और फैशन की लालसा उसे प्रतिकूल कार्यो ंके लिए मजबूर करती है। क्या फैशन का आर्थिक स्थिति से घनिष्ठ संबंध है? इस विषय में चयनित उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तरों की पुष्टि को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है–

आज का युवा फैशन को केवल श्रृंगारिकता व परिधान से संबंधित समझता है जो कि हमारे बाह्य व्यक्तिगत को प्रदर्शित करता है। जबकि फैशन मन, आत्मा, बुद्धि सभी की शुद्धता व आचरण से संबंधित होता है। छात्राओं की सोच इस विषय में क्या है के संबंध में विचारों की अभिव्यक्ति निम्नवत् है–

फैशन व आर्थिक पक्ष से संबंधित सारणी

सारणी संख्या–1

फैशन व आर्थिक पक्ष का संबंध	हाँ	नहीं	योग
आवृत्ति	84	27	111
प्रतिशत	75.68%	24.32%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 75.68 प्रतिशत छात्राएँ इस बात को स्वीकार करती हैं कि फैशन का आर्थिक पक्ष से घनिष्ठ संबंध होता है। 24.32 प्रतिशत छात्राएँ मानती हैं कि फैशन और आर्थिक पक्ष का कोई संबंध नहीं होता है। फैशन करने के लिए इच्छा शक्ति प्रबल होती है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फैशन का संबंध आर्थिकी से होता है। जैसे–जैसे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने लगती है, तो लोगों की आवश्यकताएं भी बढ़ने लगती है। आवश्यकताओं को कई विलेषणों के आधार पर यह भी पाया गया है कि आवश्यकताएँ लोगों की देखा–देखी में बढती है। जिस कारण इस फैशन को पूर्ण करने के लिए धन व्यय होता है।

फैशन निम्न मध्यवर्गीय लोगों के परिवारों पर आर्थिक बोझ का कारण होता है। क्या छात्राएं इस बात को स्वीकार करती हैं के संबंध मे छात्राओं के दृष्टिकोण निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है

फैशन आर्थिक बोझ को बढावा देता है, से संबंधित सारणी

सारणी संख्या–2

फैशन और आर्थिक बोझ	हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	योग
आवृत्ति	77	19	15	111
प्रतिशत	69.38%	17.11%	13.51%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 69.38 प्रतिशत छात्राएँ फैशन को आर्थिक बोझ को बढ़ावा देने के संदर्भ में सहमत हैं। 17.11 प्रतिशत छात्राओं ने इस बात को अस्वीकार किया। जबकि 13.51ः ने इस बात का उत्तर स्पष्ट रूप से देने में असमर्थ पाया कि बदलता हुआ फैशन प्रत्येक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार के आर्थिक बोझ को बढ़ावा दे रहा है। अतः उनका उत्तर कह नहीं सकते है, में पाया गया। फैशन आर्थिक बोझ को बढ़ावा देता है के संबंध में उत्तरदाताओं का मानना है कि फैशन जैसे ही समाज में अपनी पकड़ बनाता है तो उसका प्रभाव आर्थिकी पर पड़ता है। फैशन समाज पर प्रभाव डालता है।

क्या फैशन का संबंध केवल श्रृंगारिकता व परिधान है, से संबंधित सारणी

सारणी संख्या–3

फैशन का संबंध	सही	गलत	योग
आवृत्ति	27	84	111
प्रतिशत	24.32%	75.68%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि छात्राएँ इस बात को अधिक मात्रा मे स्वीकार करती हैं कि फैशन का मूल्यांकन केवल श्रृंगारिकता या परिधान अर्थात् बाहरी व्यक्तित्व ही नहीं है जो कि 24.32 प्रतिशत है। लेकिन 75.68 प्रतिशत छात्राएँ श्रृंगारिकता व परिधान को मुख्य रूप से फैशन से जोड़ने की समर्थक है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फैशन का संबंध उत्तरदाता श्रृंगारिकता व परिधान से नहीं मानते हैं।

फैशन को छात्राओं के जीवन स्तर में परिवर्तन हेतु महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। फैशन के कारण जीवन के प्रत्येक पहलू जैसे बोलने, चलने, उठने, बैठने का तरीका, खान–पान, रहन–सहन का स्टाइल सब परिवर्तित हो चुका है। कुछ समय पूर्व की परिस्थिति बदली–बदली सी नजर आती है और इस परिवर्तन को एक फैशन के रूप में अनिवार्य समझा जा रहा है। जब छात्राओं से यह जानने का प्रयास किया गया तो प्राप्त प्रत्युत्तर निम्नवत हैं।

छात्राओं के जीवन स्तर में परिवर्तन से संबंधित सारणी

सारणी संख्या–4

फैशन से परिवर्तन	हाँ	नहीं	योग
आवृत्ति	92	19	111
प्रतिशत	82.89%	17.11%	100

आधुनिक युग में फैशन की प्रवृत्ति बढ़ने से वे ऐसा महसूस करती हैं कि इससे छात्राओं के जीवन स्तर में परिवर्तन हो रहा है तो 82.89 प्रतिशत सर्वाधिक छात्राओं का उत्तर हां तथा 17.11 प्रतिशत छात्राओं का उत्तर नहीं में था।

75.68 प्रतिशत छात्राएँ इस बात को स्वीकार करती हैं कि फैशन का आर्थिक पक्ष से घनिष्ठ संबंध होता है। 24. 32 प्रतिशत छात्राएं मानती हैं कि फैशन और आर्थिक पक्ष का कोई संबंध नहीं होता है। फैशन करने के लिए इच्छा शक्ति प्रबल होती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फैशन का संबंध आर्थिकी से होता है। जैसे–जैसे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने लगती है तो लोगों की आवश्यकताएं भी बढ़ने लगती है। आवश्यकताओं को कई विश्लेषणों के आधार पर यह भी पाया गया है कि आवश्यकताएं लोगों की देखा–देखी में बढ़ती है। जिस कारण से फैशन को पूर्ण करने के लिए धन व्यय होता है। 69.38ः छात्राएँ फैशन को आर्थिक बोझ को बढ़ावा देने के संदर्भ में सहमत हैं। 17.11 प्रतिशत छात्राओं ने इस बात को अस्वीकार किया।जबकि 13.51 प्रतिशत ने इस बात का उत्तर स्पष्ट रूप से देने में असमर्थ पाया कि बदलता हुआ फैशन प्रत्येक निम्न मध्यमवर्गी परिवार के आर्थिक बोझ को बढ़ावा दे रहा है। अतः उनका उत्तर कह नहीं सकते है, में पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि फैशन आर्थिक बोझ को बढ़ावा देता है के संबंध में उत्तरदाताओं का मानना है कि फैशन जैसे ही समाज में अपनी पकड़ बनाता है तो उसका प्रभाव आर्थिकी पर पड़ता है। फैशन समाज पर प्रभाव डालता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 Kimball Young, A Handbook of Social Psychology, p.411

2 E.A.Ross, Social Psychology, p.941

3 गेहानी, दीपिका, दैनिक जागरण, फैशन ट्रेंड, मार्च 2006, पेज 102

4 कुमार, रितु, दैनिक जागरण, फैशन कल आ`र आज (सखी), मार्च 2006, पृ0 142–146

5 Stuart Chase, Tragedy of waste, 1926